दोहा ।

मलिनकरी छबि जोन्ह की तनछबि सो चलिजांउ
को जैहै पिय पै सखी लखि जैहै सब गांउ ॥

अथ दिवाअभिसारिका लच्छण--कबित्त ।

सारी जरतारी की झलक झलकति जैसी केसरि को अंग रंग कीने सबतन मै । तीखनि तरनि के किरनि तें दुगुनि जोति जगत जवाहिर जटित आभरनि मै ॥ कबि मतिराम आभा अंगनि अंगारनि की धूम कैसी धारा छबि छाजत कुचनि मै । ग्रीषम दुपहरि में हरिकी मिलनजात जानीजात नारि नदवारी जुतबनि मै ॥

दोहा ।

ग्रीषमरितु की दुपहरी चली बाल बनकुंज ।
आगि लपट तीखन लुबैं मलय पवन के पुंज ॥

अथ गनिकाअभिसारिका लच्छण—कबित्त ।

सांझही सिंगार साजि प्राणप्यारे पासजात बनिता बनक बनी बेलिसी अनंद की । कबि मतिराम कलकिंकिनी की धुनि बजै मन्द मन्द

चलनि बिराजत गयन्द की ॥ केसरी रंग्यौ दु-
कूल हाँसी मै झरत फूल केसनि मै छाई छबि
फूलनि के वृन्द की । पीछे पीछे आवत अँध्यारी
सी भँवरभीर आगे आगे फैलत उँज्यारी मुख
चन्द की ॥ ३ ॥

दोहा ।

नागरि सकल सिंगार करि चली प्रानपति पास ।
बाढ़ि चली बिहँसनि मनो सोभा सहज सुबास॥

अथ प्रवत्स्यत्प्रेयसी लक्षण—दोहा ।

होनहार प्रिय के बिरह बिकल होइ जो बाल ।
ताहि प्रवत्स्यैप्रेयसी बरनत बुद्धिबिसाल ॥ ५ ॥

मुग्धाप्रवत्स्यत्प्रेयसी ।

जा दिन तें चलिबे की चरचा चलाई तुम
तादिन ते वाके पियराई तन छाई है । कहै
मतिराम छोरे भूषन बसन पान सखिन सों
खेलनि हँसनि बिसराई है॥ आई रितु सुरभि
सुहाई प्रीति वाके चित ऐसे में चलौ तौ लाल
रावरी बड़ाई है । सोवत न रैन दिन रोवत

रहत बाल बूझे ते कहत माइके की सुधि आई है ॥ ६ ॥

दोहा ।

क्यों सहिहै सुकुमार वह पहिली विरह गोपाल ।
जब वाके चित हित भयो चलन लगी तब लाल ॥

अथ मध्याप्रवत्स्यप्रेयसी लक्षण—सवैया ।

गौने के द्यौस क सातक बीते न चौथि कहा अबहीं चली आई । लालन बाल के ता छिन मै मतिराम परी मुख में पियराई ॥ तू न बधू को पठाइ अरी यह देखि दुहूनि की प्रीति सुहाई । रोये से लोचन मोए से रोचन सोये न सोचन राति बिताई ॥ ८ ॥

दोहा ।

अबहींले मिलि मोहि सखि चलत आज ब्रजराज ।
अँसुवनि राखत रोकिहै जियहि निकासति लाज ॥

अथ प्रौढ़ावत्स्यप्रेयसी लक्षण—कबित्त ।

मलय समीर लाग्यौ चलन सुगंध सीरो पछिकन कीनि परदेसन ते आवने । मतिराम सु-

कवि समूहनि सुमन फूलें कोकिल मधुप लागे बोलन सुहावने ॥ आयो है बसंत भये पल्लवित जलजात तुम लागे चलिबे की चरचा चलावने । रावरी तिया के तरवर सरवरन के किसलै कमल ह्वैहैं बारक बिछावने ॥ १० ॥

दोहा ।

कोपन ते किसलै जबै होहि कलिन ते कौल ।
तब चलाइयो चलन की चरचा नागर नौल ॥

अथ परकीयाप्रवत्स्यत्प्रेयसो लक्षण—कबित्त ।

मोहन लला को सुन्यो चलत बिदेस भयो मोहनी को चारु चित निपट उचाट मैं । परी तलबेली तन मन मैं छबीली राखै छिति पर छनक छनक पांव खाट मैं ॥ प्रीतम नयन कुव लयनि को चन्द घरी एक मै चलैगो मतिराम जिहि बाट मैं । नागर नबेली रूप आगरी अकेली रीती गागरि लै ठाढ़ी भई बाटही के घाट मै ॥ १२ ॥

दोहा ।

चलत सुन्यौ परदेस कौं हियरो रह्यौ न ठौर ।
लै मालिनि मीतहि दयो नव रसाल को मौर ॥

अथ गनिका प्रवत्स्यप्रेयसी लच्छन—कबित्त ।

मंजन कियो न तन अंजन दियो न नैन जावक दियो न पाइ रही मन मारि कै । मतिराम सुकबि तमोल तेल छाडि बैठी पहिरे बसन डारे भूखन उतारि कै ॥ ऐहै आज पिय बिदा मांगन बिदेस को यौं नेह की जनाइबे की चातुरी बिचारि कै । गारिराख्यौ चन्दन बगारि घनसार राख्यो अगमन सेज सरसिजनि सँवारि कै ॥ १४ ॥

दोहा ।

चलत पीय परदेस कौं बरजि सकौं नहिं तोहि ।
ले ऐहो आभरन जो जियत पाइहौ मोहि ॥ १५ ॥

अथ आगमपतिका लच्छन—दोहा ।

जा तिय को परदेस तें आयो प्यौ मतिराम ।
ताहि कहत कवि लोग हैं आगतपतिका बाम ॥

अथ मुग्धा आगतपतिका लक्षण—सवैया ।

आयो बिदेस ते प्रानपिया मतिराम, अनंद बढ़ाइ अलेखै । लोगनि को मिलि आंगन बैठे घरीहि घरी सगरो घर पेखै ॥ भीतर भौन के द्वार खरी सुकुमार तिया तन कम्प बिसेखै । घूंघट में पट ओट किये पट ओट किये पति को मुख देखै ॥ १७ ॥

दोहा ।

पिय आयो नव बालतन बाढ़े हरख बिलास ।
प्रथम बारि बूंदनि उठे ज्यों बसुमती सुबास ॥

अथ मध्याआगतपतिका लक्षण—सवैया ।

चन्दमुखी सजनीनि के संग हुती पिय अंगनि मै मन फेरत । ताहि समै पियप्यारे को आवन प्यारी सखी कह्यौ द्वार तें टेरत ॥ आइ गये मतिराम जबै तबै देखत नैन अनन्द भये रत । भौन के भीतर भाजि गई हँसि कै हरये हरि कों फिरि हेरत ॥ १९ ॥

दोहा।

पियागमन सरदागमन बिमल बालमुख इन्द ।
अंग अमल पानिप भयो फूले दृग अरबिन्द ॥

अथ प्रौढ़ाआगतपतिका लक्षण—कबित्त।

प्रानपियारो मिलो सपने मैं परी जब नैसिक नींद निहोरैं। नाह को आइबो त्योंही जगाइ सखी कह्यौ बैन पियूष निचोरैं ॥ यौं मतिराम बढ्यो जिय में सुख बाल कै बालम सों दृग जोरैं। ज्यौं पट मैं अतिही चटकीलो चढ़ै रंग तीसरी बार कै बोरैं॥ २१ ॥

दोहा।

आयो पिय परदेस तें हिय हुलसी अतिबाम ।
टूक टूक कंचुकिकरी करि कामनेती काम॥२२॥

अथ परकियाआगतपतिका लक्षण—सवैया।

आयो बिलंबि बिदेस तें बालम बाल वियोग बिथा बिसराई । आई तहां तिनकै संग ह्वै सब गांउ की जे जुवती जुरिआई ॥ देखत ही मतिराम कहै अखियांनि मैं आनंद की

छबि छाई । लाजनि क्योंकरि बैन कहै सुकह्यो दुख देहई की दुबराई ॥ २३ ॥

अन्यत् यथा ।

भावते को सुनि आगम आनँद अंग अनंगनि ते उमह्यो है । सो हमह्रू सि हितू सि दुराइये आली कहो यह कौने कह्यो है ॥ खैंचि लिये मुख के अँसुवा यह क्यों दुरिहैं जो हियो उलह्यों है । गाढ़ी भई मोहरी दरकी अँगिया की तनीन तना उगह्यो है ॥ २४ ॥

दोहा ।

सुन्यौ मायके ते कहै बाम्हन आयो कन्त ।
कुसल बूझिबे के मिसि लीनो बोलि इकन्त॥२५॥

अथ गनिकाआगतपतिका लक्षण—कबित्त ।

नागर बिदेस मैं बिताइ बहु द्यौस आयौ नागरि कै हिये मै हुलासनि की खानि की । कबि मतिराम अंक भरत मयंकमुखी नेहै सरसाइ भौंहै कीनी सुखदानि की ॥ सुबरन बोलि के बतावतु है सुबरंन हीरनि बतावति है छबि

मुसुकानि की । आँखिन ते आनंद के आँसू उँमगाय प्यारी प्यारे को दिखाधत सुरति मुकुतानि की ॥ २६ ॥

दोहा ।

फूलो नागरि कमलनी उड़िगे मित्र मलिंद ।
आयो मित्र विदेस ते भयो सुदिन आनन्द॥२७॥

अथ उत्तमनायका - दोहा ।

पियहित कै अनहित करै आपु करै हित नारि ।
ताहि उत्तमा नायका कबिजन कहत बिचारि ॥

राति कहूं रमि कै मनमोहन आगम प्रात प्रिया घर कीनो । देखतही मुसुकाइ उठी चलि आगे ह्वै आदर कै पुनि लीनो ॥ मोहन के तन मै मतिराम दुकूल सुनीलो निहारि नबीनो । केसरि के रंग सो रंगि कै पट पीत कै प्रीतम के कर दीनो ॥ २८ ॥

दोहा ।

पिय अपराध अनेक निज नैनन हू लखि पाइ ।
तिय इकन्त पिय कन्त सो मानै करत लजाइ ॥

अथ मध्यमा नायिका ।

पियसों हित मैं हितकरै अनहित कीने मान ।
ताहि मध्यमा कहत हैं कबि मतिराम सुजान ॥

आयो प्रानपति राति अनत बिताय बैठी भौंहनि चढ़ाइ रँगी सुन्दरि सुहाग की । बातनि बनाइ पर्‌यो प्यारी के पगन आइ छल सों छपाइ छैल छबि रति दाग की ॥ छूटि गयो मान लागी अपुही सँवारन कों खिरकी सुकवि मतिराम पियपाग की । रिसही के आंसू रस आंसू भये आंखिन में रिस को ललाई सो ललाई अनुराग की ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

मेरे तन के रोम ये मेरे नाहि निदान ।
उठि आदर अगमन करै करौं कौन बिधि मान ॥

अथ अधमा नाइका ।

पिय सों हितहूं के किये करै मान जो बाल ।
तासों अधमा कहत हैं कबि मतिराम रसाल ॥

आयो है सयान मन गयो है अयान तौहू नित उठि मान करिबे की टेव पकरी। घर २ मानिनी हैं मानती मनाये ते वै पर ऐसो रीति और काहू मै न जकरी ॥ कवि मतिराम काम रूप घनस्यामलाल तेरी नैन कोरे बोर चाहै एकटकरी। हाहा कै निहोरेहू न हेरत हरिननैनी काहे को करत हठ हारिल की लकरी॥

दोहा।

कहा लियो गुरुमान को अति ताती है नेम।
पारद सो उड़ि जाइगो अलि चंचल है प्रेम ॥

अथ नायक लक्षण – दोहा।

तरुन सुघर सुन्दर सकल काम कलानि प्रवीन।
नायक यौं मतिराम कहि कबित गीत रसलीन॥

सवैया।

गुच्छनि कै अवतंस लसै सिखि पच्छन अच्छ किरीट बनायो। पल्लव लाल समेत छरी कर पल्लव सों मतिराम सुहायो॥ गुञ्जनि को उर मंजुल हार सुकुञ्जनि ते कढ़ि बाहर आयो।

आज को रूप लखि ब्रजराज को आंखिन को फल आजुहि पाय्यो ॥ ३८ ॥

दोहा।

भरी भांवरि सांवरे रासरसिक रस जान ।
उनही मैं मन भ्रमत है ह्वै बौंडर को पान ॥

दोहा।

पति उपपति वैसिकत्रिविध नायकभेद बखानि।
विधिसौंव्याहो पति कह्यो कविकोविद मतजानि॥

यथा।

पाइ धरे दुलही जिहि ठौर रहै मतिराम तहैं दृग दीने । छोड़ सखान के साथ को खेलिबो बैठे रहै घरही रसभीने ॥ साझहि तें ललकैं मनही मन लालनै यों रस सौं बस लीने। लोनी सलोनी की सोने से अंगनि गौने की चूनरि टौने से कीने ॥ ४१ ॥

दोहा।

जादिन ते गौनो भयो आई बाल रसाल ।
तादिनते बिरहिनि भई हरि उर की बनमाल॥

चारि भांति सों बरनिये प्रथम कहत अनुकूल।
दच्छिन पुनि गनि धृष्ट सठ रस सिंगार को मूल॥

अनुकूल—यथा।

सदा आपनी नारिसों जासुहिये अतिप्रीति।
परनारी ते बिमुख जो सो अनुकूल सुरीति॥

सवैया।

केहू नहीं बिसरै निसिबासर मन्द हँसी मुखचन्द उँज्यारी। त्योंही दिपै अति नेह सो देह की दीपकली सम दीपति न्यारी॥ तेरियै जोति जगै हिय भीतर आवत और न राति अँध्यारी। नैननहूं अरु बैननहूं मनहूं कों तुही अति लागत प्यारी॥ ४५॥

दोहा।

सपनेहू मनभावतो करत नहीं अपराध।
तेरे मनही मै रही सखी मान की साध॥४६॥

अथ दच्छिन लच्छण—दोहा।

एक भांति सब तियन सों जाको होइ सनेह।
सो दच्छिन मतिराम कहि बरनत हैं मतिगेह॥

यथा।

सांझ समै ललना मिलि आईं खरो जहां नंदलला अलबेलो। खेलन को निसि चांदनी मांह बनै न मतो मतिराम सुहेलो॥ आपनी आपनी पौरि बताय कै बैन कह्यौ सिगरोन नवेलो। त्यौं हसि कै ब्रजराज कह्यौ अब आज हमारिही पौरि मै खेलो॥ ४८॥

दोहा।

दच्छिन नायक एक तुम मनमोहन ब्रजचन्द।
फुलये ब्रजबनितानि कै दृग इन्दीवर* बृन्द॥४९॥

धृष्ट लच्छण–दोहा।

करै दोष निरसंक जो डरै न तिय के मान।
लाज धरै मन मै नहीं नायक धृष्ट निदान॥

बरजो न मानत हौं बार बार बरजों मैं कौन काम मेरे इत भौन में न आइये। लाज को न लेस जग हांसी को न डर मन हँसत हँसत कछु बात न बनाइये॥ कबि मतिराम नित उठि कलकांन करो नित झूठी सौंहैं कीजै नित बि-

* नील कमल रात्रिही को खिले है।

सराइये। ताके पग लागो निसि जाके उरलागे
लाल मेरे पग लागि उर आगि न लगाइये॥५१॥

दोहा।

निलज नैन कुलटानि के आनि बसी ब्रजराज।
हिये तिहारे तें सकल मारि निकारी लाज॥

सठ लक्षण – दोहा।

अति प्रिय बोलैऽप्रिय करै निपटकपट जुतहोइ।
सठनायक तासोंकहत कवि कोविद सबकोइ॥

मोतें तो न कछू अपराध भयो प्रानप्यारी
मानकरि रही याही काहेकों अरस तें। लोचन
चकोर मेरे सीतल हैं होत तेरे अरुन कपोल
मुखचन्द के दरस तें॥ कहै मतिराम उठि
लागि उर मेरे कत धारत कठोर मन आंसुन
बरस तें। कोपते कठोर बोल बोलत है तऊ
मोको मीठे होत अधर सुधारस परस तें॥५४॥

दोहा।

पियत रहै अधरानि कों रस अति मधुर अमोल।
तातें मीठे कढ़त हैं बालबदन तें बोल॥५५॥

जो परनारिन को रसिक उपपति ताहि बखानि।
प्रीतम जो गनिकानि को ताकौं बैसिक जानि॥

अथ उपपति को लच्छण—कबित्त।

सुंदरि सरस सब अंगनि सिंगार साजि सहज सुभाव निम नेह कछु कै गई। कीने मतिराम बिहसौंहे से कपोलबोल बोलै न अमोल इतनोई दुख दै गई॥ मेरे ललचौंहे चाहि चख मुख फेरि कै लजौहे ललचौंहें चारु चखनि चितै गई। निपट निकट ह्वै कै कपट कुवाड़ अंगलाइ कैसी लपट लपेटि मन लै गई॥५७॥

दोहा।

नैन जोरि मुख जोरि हँसि नैसिक नेह जनाइ।
आगि लेन आई हिये मेरें गई लगाइ॥ ५८॥

अथ वेसिक लच्छण—कबित्त।

अगमन चाहि चकचौंधि रही तब जब जगर मगर आभरंन के नगन भो। जोबन के मद रूप मद वाके मैन मद छकि मतवारो ह्वै कै थकित मगन भो॥ कहै मतिराम लोल लो-

चन बिसाल वंक तीछन कटाछनि सों छिदि कै लगन भो। बार बार भ्रमि हारबधू बार भौरेनि मै मांग की सुकुतमाल गंग मैं मगन भो॥

दोहा।

लोचन पानिप ढिग सजी लटवन सी परबीन।
मो मन बारबिलासिनी फांसि लियो जनु मीन॥
मानी बचनचतुर कह्यौ क्रियाचतुर पुनि जानि।
तीनभांति औरो कहत नायक सुकबि बखानि॥

अथ मानी लच्छण—दोहा।

करत नायका सों कछू नायक जो अभिमान।
तासौं मानी कहत हैं कबि मतिराम सुजान॥

यथा।

बहु सुधि करो जाव नैन नलिनी दलन सेज सीरे सीरे सरसिजनि बिछाइये। अमल उसीर इंद चन्दन गुलाब नीर कहां लगि और उपचारनि गनाइये॥ छलबल वाकों मै मिलाइ कै जिवाये तव कबि मतिराम अवं साहिबी जताइये। ऐसो मन भयो मनभावन गुमान है जु प्यारि को मनावन कौं तुम कौं मनाइये॥६३॥

दोहा ।

यामै कौन सयान है मोहन लाल सुजान ।
आपकरत अपराध हौ आपुहि पुनि अभिमान ॥

अथ बचनचतुर लछन—दोहा ।

बचननि मे जो करत है चतुराई मतिराम ।
बचनचतुर नायक सरस लीजी जानि सकाम ॥

यथा ।

दूसरे की बात सुनि परत न ऐसी जहां कोकिल कपोतनि की धुनि सरसाति है । छाइ रहे द्रुम बहुबेलिन सों मतिराम अलिकुल-कलित अँध्यारी अधिकाति है ॥ नषत से फूले हैं सुफूलनि के पुंज बनकुंजनि मे होत मनो दिनही मे राति है । ता बन की बाट कोउ संग न सहेली कहि कैसे तूं अकेली दधि बेंचन कों जाति है ॥ ६६ ॥

दोहा ।

तोको देउ बताइ हौं तू कत होति उचाट ।
ग्वारिनि दधि बेंचन गई बंसीबट की बाट॥६७॥

अथ क्रियाचतुर लक्षण दोहा ।

करे क्रिया सो चातुरी जो नायक रस लीन ॥
क्रियाचतुर तासों कहत कवि मतिराम प्रवीन ।

नँदलाल गये तितही चलि कै जित खेलत बाल सखी गन में । तहीं आपुहि मूंदे सलोनी के लोचन चोर मिहीचनि खेलनि में ॥ दुरिबे को गई सिगरी सखियां मतिराम कहै इतनी छन में । मुसुकाइ कै राधिके कंठ लगाइ छिप्यो कहुं जाइ निकुंजन में ॥ ६९ ॥

दोहा ।

सांझ समै वा छैलकी छलनि कही नहि जाइ ।
बिनडर बन डरपाइ कै लई मोहि उरलाइ ॥

अथ प्रोषितनायक लक्षण—दोहा ।

नायक होइ बिदेस मै जो बियोग अकुलाइ ।
तासों प्रोषित कहत हैं जे प्रबीन कबिराइ ॥

प्यारपगे बचन पियूष पांन करि उर उमगि उमगि जिय आनंद बिसेखिहौं । कहै मतिराम तन तपति बुझाइ जैहै तबै निज अ-

नम सफल करि लेखिहौं ॥ हीतल को सीतल करनि चारु चान्दनी सी मंद मृदु मुसुकानि अन मिख पेखिहौं । ह्वैहै तब निसा मेरे लोचन चकोरनि की जब वह अमल आनन इन्दु देखि हौं ॥ ७२ ॥

दोहा।

प्रफुलित सुमनसुवास में करबो आनँद केलि ।
सो नीके दिन लागिहैं उर सोने की बेलि ॥

अथ दरसन लक्षण—दोहा।

दरसन आलंबनहि में कवि मतिराम बखानि ।
श्रवन स्वप्न अरु चित्र त्यौं पुनि प्रत्यक्षामानि ॥

अथ श्रवनदरसन लक्षण—सवैया।

आनन पूरन चन्द लसै अरबिन्द बिलास बिलोचन पेखे । अम्बर पीत हँसै चपला छवि अंबुद मेचक अङ्ग उरेखे ॥ कामहु तें अभिराम महा मतिराम हिये निहचै करि लेखे । तें बरन्यौ निज बैननि सों सखि मै निज नैननि सों मनो देखे ॥ ७५ ॥

दोहा।

जैसी तैं बरन्यो सखी रूप कान्ह को आइ ।
तैसोई मेरे हिये रह्यो आइ ठहराइ ॥ ७६ ॥

अथ स्वप्नदरसन—सवैया ।

आवत मैं सपने हरि को लखि नैसिक बाट सकोचनि छोड़ो। आगे ह्वै आड़े भये मतिराम मिले सुचि लै अख लालच बोड़ो ॥ ओठनि को रस लेन कौं मोहन मेरी गही करकंजनि ठोड़ी । और भटू न भई कछु बातगई इतनेही मै नीन्द निगोड़ी ॥ ७७ ॥

दोहा ।

पियमिलाप को सुख सखी कह्यो न जाय अनूप ।
सौतुख * सो सपनो भयो सपनो सौतुख रूप ॥

अथ चित्रदरसन—कवित्त ।

अचल भये हैं गात परस न जान्यो जात कही न सुनत बात जात बातन कही । सूंघै न सुबास सुमनन की समझि नाही परै टक

* प्रत्यच ।

टकी बड़े द्रिगनि में उलही ॥ कहै मतिराम तोहि नेक परवाही न है ऐसी भांति भई वह तेरे नेह सूनहीं । एरे चितचोर चलि चाहि चन्दमुखी तोहि चित्रहू मे चाहि चाहि चित्रही सी ह्वै रही ॥ ७६ ॥

दोहा।

चित्रहु में जाकै लखैं होत अनन्त अनन्द ।
सपनेहूं कबहूं सखी मोहि मिलि हैं ब्रजचन्द ॥

अथ प्रत्यक्षदरसन—कबित्त।

मोहन लला को मुख मोहनी बिलोकन को नीठि गहि राखत है उमगे उमाह कौं । सखिन को डीठि को बचाइ कै निहारत है आनँद प्रवाह बीच पावत न थाह कौं ॥ कबि मतिराम गुरलोगन के देखत हूं ऐसी बिधि देखत छपावत उछाह कौं । वेई नैन लागत मिठाई भरे लोगनि को वेई नैन लागत सनेह भरे नाहकौं ॥ ७८ ॥

दोहा।

नंद नंद के रूप पर रीझि रही रिझवार ।
अधमूंदी अखियन दई मूंदी प्रीति उघार॥७९॥

अथ उद्दीपन लक्षण—दोहा।

चन्द कमल चन्दन अगर रितु बन बाग बिहार।
उद्दीपन शृङ्गार के जे उज्जल संभार ॥ ८३ ॥

सवैया।

पूरन चन्द उदोत कियो घन फूलि रही बन जाति सुहाई। भौरनि की अवली कलकैरव कैरव पुंजनि मै मृदु गाई ॥ बांसुरी ताननि काम की बाननि लौं मतिराम सबै अकुलाई। गोपिन गोप कछू न गने अपने २ घर तें उठि धाई ॥ ८४ ॥

दोहा।

प्रथमकामिजनमननकौं रँगत सुरभि रितुराग।
मण्डत है नवपल्लवनि पुनि पीछे बन बाग ॥
सखी दूतिका जानिये उद्दीपन के भेद।
नायक अरु नायका को हरै बिरह कोखिद ॥
जा तिय सो नहि नायका कछू छपावै बात।
ताको बरनत कहि सखी सब कविमति अवदात॥
मण्डन औ सिच्छा करन उपालंभ परिहांस।
काज सखी को जानियो औरौ बुद्धिबिलास ॥

मण्डन — यथा।

जावक रंग लग्यौ पद पङ्कज नाहक चित्त रंगी रंगजातें। अञ्जन दै करि नैननि मे सुखमा बढ़ि स्याम सरोज प्रभातें॥ सोने के भूषन अंग रच्यौ मतिराम सबै बस कौबे की घातें। यों ही चलै न सिंगारि सुभावहि मैं सखि भूलि कही सब बातें॥ ८९॥

दोहा।

सखी तिया की देह मैं सजै सिंगार अनेक।
कजरारी अखियानि मैं भूल्यौ काजर एक॥९०॥

अथ शिक्षा — यथा।

मलय पवन मन्द मन्द कै गमन लाग्यौ फूलनि के वृन्दनि ते मकरन्द ढारने। कवि मतिराम चितचोर चारो ओर चाहि लग्यौ चेत चन्द चारु चान्दनी पसारने॥ अलिन की आली आली मैन कैसे मन्त्र पढ़ि लागी सब मानिनी के मान मद झारने। सुमन समाज साजि सेज सुख साज करी लाज कगी आज ब्रजराज पर वारने॥ ९१॥

दोहा।

कत सजनी ह्वै अनमनी अँसुवा भरत ससङ्क।
बड़े भाग नँदलाल सौं झूठेहु लगत कलङ्क ॥

उपालम्भ—यथा।

पानी को कहानी कहा पानी को न पान करै आह करि उठत अधिक उर आधिकै। कवि मतिराम भई बिकल बिहाल बाल राधिकै जियाइ रे अनंग अवराधिकै ॥ याहि को कहायो ब्रजराज दिन चारहीमें करिहै उजारि ब्रज ऐसी रीति नाधि कै। जैसी तू बिलोक्यौ हरि वाकी ओर फेरि तैसे बैरीहू सौं बैरी ना बिलोकै बैर साधि कै ॥ ९३ ॥

दोहा।

वाको मन लीने लला बोले बोल रसाल।
झुकत तनकही बात मै ललित बेलि सी बाल॥

परिहास यथा।

गौने को द्यौस सिंगारन को मतिराम सहेलिन को गन आयो। कंचन के बिछुवा पहि-

रावत प्यारी सखी परिहांस जनायो ॥ पीतम श्रौन समीप सदा बजौ यौं कहिकै पहिले पहिरायो। कामिनि कौल चलावनको कर ऊंचो कियो पै चल्यो न चलायो ॥ ६५ ॥

दोहा ।

प्रभा तरौना लाल की परी कपोलनि आनि ।
कहा छपावत चतुर तिय कन्त दन्तक्षत जानि ॥
भुर्ज फूले लावत सखी कर चलाइ मुसुकाइ ।
गाढ़े गह्यो उरोज तिय बिहसी भौंह चढ़ाइ ॥

अथ दूती—दोहा ।

निपुन दूतता मैं सदा दूती ताहि बखानि ।
उत्तिम मध्यम अधम यौं तीनि भांति पुनि जानि
मोहै जो मन बोलि कै मधुर वचन अभिराम।
ताहि कहत कविराज हैं उत्तिम दूती नाम ॥

यथा ।

जादिन ते देखे मतिराम तुम तादिन ते चढ़ि रही मुसुकानि वाको हियराई पर। भावत न भौन है बनावत न भूषननि हैत न औं-

रत सुधानिधि सियराई पर ॥ चलौ उठि देखौ बड़े भाग हैं तिहारे अब धारि राखौ राधिकै कन्हाई जियराई पर। दूनी दुति छाई देहआई दुबराई पिय राई लोन वारिये प्रिया की पिय-राई पर ॥ १०० ॥

दोहा।

तिय के हिय के हनन को भयो पंचसर बीर।
लाल तुम्हें बसकरन को रहे न तरकस तीर ॥

अथ मध्यम दूती दोहा।

कछुक बचन हित के कहै बोले अहित कछूक।
मध्यम दूती कहत हैं तासों सुकवि अचूक ॥

चरन धरै न भूमि विहरै तहांई तहां फूले फूले फूलनि बिछाई परजंक है। भार के डरन सुकुमार चारु अंगनि में करत न अंगराग कुं-कुम की पंक है ॥ कवि मतिराम देखि वाता-यन बीच आयो आतप मलीन होत बदन म-यङ्क है। कैसे वह बाल लाल बाहिर बिजन जाय बिजन बयारि लागैं लंचकत लङ्क है ॥३॥

दोहा।

रीझि रही रिझवार वह तुम ऊपर ब्रजनाथ ।
लाजसिंधु की इन्दिरा क्योंकरि आवै हाथ ॥

अथ अधमादूती—दोहा।

अधमदूतिका जानियो वचन कहै सतराइ ।
ग्रन्थन को मत देखिकै बरनत सब कविराइ ॥

जानत कछू न पै कहावत रसिकराय ल्याउ ल्याउ अबहीं तिहारी यह टेक है। कूरनि की रीति है जू ढेलो ऐसो डारियत मतिराम चतुराई चतुर लिये कहैं ॥ बोली ना नवेली कछु बोली सतराय वाहि मनसिज ओज को सुहानो आजु सो कहै। बात के सुनत अरसात अँगिरात प्रात सोहैं करि नैन बिहसौंहै भई नेक है ॥ ६ ॥

दोहा।

जोबनमण्डित आपनो अजौं न जानत गात ।
तौ चित मै अति चटपटी निपट अटपटी बात ॥

अथ अनुभाव दोहा ।

जिनतें चित रतिभाव को आक्रो अनुभव होइ।
रससिंगार अनुभावतेहि बरनत कवि सब कोइ॥

दोहा ।

लोचन बचन प्रसाद मृदु हास हाव धृत मोद ।
इनतें प्रगटहिं भाव रति बरनत सुमति विनोद॥

भाव उदाहरण यथा ।

गहि हाथ सों हाथ सहेली के साथ में आवतही वृषभानु लली । मतिराम सुवास ते आवत नोरे निवारत भौंरन की अवली ॥ लखि कै मनमोहन कों सकुची करि चाहत आपनि ओट चली । चित चोरि लयो चष जोरि तिया मुखमोरि कछू मुसुकाइ चली ॥ १० ॥

अथ अनुभाव ल० दोहा ।

ते अनुभावै जानियो जो है सात्विक भाउ ।
रसग्रन्थन अवलोकि कै बरनत सब कविराउ ॥

दोहा ।

स्तंभ खेद रोमांच स्वरभंग कम्प वैवर्न ।
आँसू और प्रलाप कहि आठौ ग्रन्थ विवर्न ॥

अथ स्तम्भ लक्षन दोहा ।

लज्जा हरषादिकन तें अचल होत जहँ अंग ।
स्तम्भ कहत हैं ताहि कों जे प्रवीन रसरंग॥१३॥

देखतही मतिराम रसाल गही मति प्यारी की प्रेमनि गाढ़ी । चाहिबे की चितचाह भई पै गई हिय तें कलकानि न काढ़ी॥ संग सखीन को मान दुरावति आनन आनन्दकी रुचि बाढ़ी॥ पाइ परै मग मैन मरूकै भई मिस लाजनि के फिरि ठाढ़ो ॥ १४ ॥

दोहा ।

पाई कुंज इकान्त मै भरी अंक ब्रजनाथ ।
रोकनिकों तिय करति पै कह्यो करत नहिं हाथ॥

अथ स्वेद—दोहा ।

हरख लाज स्रम कोप भय इत्यादिक तें होय ।
पानी परगट देह तें स्वेद कहावत सोइ ॥१६॥

किंकिनि नेवर कि भनकारनि चारु पसारि महा रसजालहि । काम कलोलनि मै मतिराम कलानि निहाल किधी नंदलालहि ॥ स्वेद कें

बिन्दु लसैं तन मै रति अन्तरही भरि अंक गोपालहि। फूली मनो मुकुताफल पुंजनि हेमलता लपटानी तमालहि ॥ १७ ॥

दोहा।

कुच तें श्रमजलधार चलि मिलि रोमावलि रंग।
मनो मेरु की तरहटी भयो सितासित संग ॥

अथ रोमांच लक्षण—दोहा।

हरख भयादिक तें प्रगट रोम उमग जो अंग।
ताहि कहत रोमांच हैं कबिजन सुमति उतंग॥

चन्दमुखी हांसी मै चमेली की लता सी होत चम्पक लतासी अंग जोति कौं धरति है। कवि मतिराम तेरे तन की सुबास लहै कौन बेली ऐसी भांति जानि न परति है॥ नेसिक निहारि तेंन बेली कोर नैननि के ऐसी अद्भुत की कलानि आचरति है। ललित तमाल स्याम रसिक रसाल कौं कलित मुकुलनि के कुलनि कौं करति है॥ १९॥

अथ सुरभंग लक्षण—दोहा।

क्रोध हरख मद भीत तें बचन और बिधि होय।
ताहि कहत सुरभंग हैं कबि कोविद सबकोय॥

ताहि लै आई अली रतिमंदिर जाकी लगै रतिहू परछाहीं। आइ गयो मतिराम तहीं जेहि कोटिक काम कला अवगाहीं॥ देखतही सगरी डगरी पकरी हँसि कै तियकी पिय बाहीं। लाज नई सुरभंग भई सुकढ़ी मुखमंद महूँ करि नाहीं॥ २१॥

दोहा।

कहा जनावति चातुरी कहा चढ़ावति भौंह।
अधनिकरे अखरानि सौं सोहै कौजति सौंह॥

अथ कम्प लक्षण—दोहा।

कोप हरख भय आदि तें हरहरात जो देह।
ताहि कंप यों कहत हैं कबि कोविद मतिगेह॥

इंदुमुखी अरविन्द की मालनि गूंधत रूप अनूप बगायो। काम सरूप तहीं मतिराम अनंद सो नंदकुमार सिधायो॥ देखत कंप छुटो

तिय के तन यौं चतुराई को बोल उचारयो ।
सीरे सरोज लग्यो सजनी कर कांपत जात न
हार सँवारयो ॥ २४ ॥

दोहा ।

लालबदन लखिबाल के कुचन कम्प रुचिहोति ।
चपल होत चकवा मनौ चाहि चन्द की जोति ॥

अथ वैवर्ण लक्षण—दोहा ।

मोह कोह भय आदिते बरन और विधि होइ ।
ताहि कहत वैवर्न हैं सकल सयाने लोइ ॥२६॥

छबि सौं छबीली की सहेलिन बुलाइ करि ऊपर अटारी जाय रूप रच्यौ ख्याल को । कबि मतिराम भूषननि की छनक सुनि चाइ भौ चपल चित रसिक रसाल को॥ अली चली सकल अलीक मिस करि करि आवन निहारि करि मदन गोपाल को । लालन को इन्द सौं बदन अवलोकि अरबिन्द सो बदन कुह्मिलाय गयो बाल को॥ २७ ॥

दोहा।

बाल रही इकटकी निरखि लालबदन अरविन्द।
सियराई नैननि परी पियराई मुख इन्द ॥२८॥

अथाश्रु—दोहा।

हर्ष दुःख भय आदि तें जल आवै अँखियानि।
ताहि बखानत अश्रु कहि ग्रंथन को मत जानि॥

बैठे हुते लाल मनमोहन छबीलो बाल छनक सकोच राखि गुरजन भीर को। कवि मतिराम दीठि चोर की बचाइ देखि देखतही चोरै भये राखै अब धीर को॥ तन की खबर भूलि आंखिन गै छायो पूरि पूर निरमल अति आनंद के नीर को। उमगि हिये ते आयो प्रेम को प्रवाह तातें लाज गिरि गई जैसे तरिवर तीर को॥ ३०॥

दोहा।

बिन देखे दुख के चलैं देखे सुख के जाँहि।
कहो लाल इन दृगनि के अँसुवा क्यों ठहराहि॥

प्रलय लक्षण—दोहा।

जीवत तन मै होत है ईहा सकल निरोध ।
हरष दुःखभय आदितें प्रलय कहत मति सोध॥

यथा।

जा छन तें छवि सो मुसुकातु कहूं निरखै नन्दलाल बिलासी। ता छन ते मनहीं मन मै मतिराम पियै मुसुकानि सुधासी॥ नैक निमिष न लागत नैन चको चितवै तिय देवतिया सी। चन्दमुखी न चलै न हलै निरवात निवास मै देह दिया सी॥ ३३॥

दोहा।

तोमै अनमिषनैनता मोहन मूरति मैन।
अनिमिष नैन सुनैन भरि निरखत अनमिष मैन॥

अथ जृम्भा लक्षण दोहा।

जृम्भा को कवि कहतहैं नवयों सात्विक भाव।
उपजत आरस आदि तें बरनत सब कविराव॥

केलि कै सकल रात प्रात उठि अँगराति नींद भरे, लोचन जुगल बिलसत है। लाजनि

ती अंगनि दुरावति है बार बार खैंचि करि ब-
मन बिहारी बिहसत है ॥ कवि मतिराम आइ
आरस जम्हाइ मुख ऐसो मनभावती को छवि
सरसत है। अरुन उदोत मानो सोभा के सरो-
वर मै सोभामान सोभा को सरोज बिगसत है।

दोहा।

आये पीउ बिदेस तें बहुतै द्यौस बिताय।
सखी उंठाई पास तें सांझहि ती जमुहाय॥

अथ शृङ्गार बरनन दोहा।

जो बरनत तिय पुरुषकों कवि सुबिबुध रसभाव।
वासों रीझत सुकवि है सो सिँगार रसराव॥
कहि सिँगार रसभाव द्वै प्रथम कहत संजोग।
ग्रन्थन को मत देखिकै दूजो कहत वियोग॥

अथ संयोग शृङ्गार दोहा।

प्रमुदित नायक नायका जहँ मिलाप मै होत।
सो संयोग सिंगार कहि बरनत सुमति उदोत॥

प्रानपिया पिय आनँद सों बिपरीति रची
रति सो कस बैखै। कामकलोलनि, कै मति-

राम रही धुनि यों कलकिङ्किनि की ह्वै ॥ आ-
नन की उँजियारी परी श्रमबिन्द समेत उरोज
लसै ह्वै । चन्द की चान्दनी के परसें मनो चन्द
पषान पहार चलै च्वै ॥ ४१ ॥

दोहा ।

छुवत परस्पर हेरि कै राधा नन्दकिशोर ।
तियपियगोलकपोलकौं पियतिय उरज कठोर॥
नारिन के शृङ्गार कों इहां कहत हैं हाव ।
ते संयोग सिंगार में बरनत सब कविराव ॥
लीला प्रथम विलास पुनि त्यों विच्छिप्त बखानि।
विभ्रम किलकिंचित् बहुरि मोटाइत उरआनि।
बहुरि कुट्टमित कहत हैं पुनि बिब्बोक बखानि
ललितबरनिअरु विहितकहि सकलहावदसजानि

लीला हाव ।

पिय भूषन वचनादि की लीला करै जु बाल ।
तासों लीलाहाव कहि बरनत सुमति रसाल ॥

प्यार पगी पगरी पिय की बसि भीतर आ-
पनै सीस सँवारी । एते में आगन ते उठि कै

तहँ आइ गये मतिराम बिहारी ॥ देखि उतारनि लागी पियां पिय सौंहनिसौं बहुरो न उतारी । नैन नवाइ लजाइ रही मुसुकाइ लला उर लाइ पियारी ॥ ४७ ॥

दोहा ।

मेरे सिर कैसी लगै यौं कहि बांधी पाग ।
सुन्दरि रति विपरीत मैं प्रगट कियो अनुराग॥

अथ विलास लक्षण दोहा ।

गमन नयन बचनादि मै होत जु कछू विसेष ।
बरनत ताहि विलास हैं रसमय सुकवि असेष॥

किङ्किनी कलित कल नूपुर ललित रव गौन तेरो देखि कै सकत करि गौन को । मृदु मुसुकानि मुखचन्द चारु चांदनी सो राख्यौ कै उज्यारो अभिराम हार भौन को ॥ सहज सुभावनि सो मोह नीक भावनि सो हरत है कवि मतिराम मन रौन को । रूप मद छाकी अति छवि सौं छवीली छेदै तिरछी चितौनि मैन बरछी से कोन को ॥ ५० ॥

दोहा ।

तेरी चलनि चितौनि मृदु मधुर मन्द मुसुकानि।
छाइ रहीलखिलालकी अखियनमिलिमिसआनि

अथ विच्छिप्त हाव ।

थोरेही भूषन बसन जहँ सोभा सरसाइ ।
ताहि कहत बिच्छिप्त हैं जे प्रवीन कविराइ ॥

वारने सकल एक रोरिही की आड़ पर
हहा न पहिरि और आभरन अंग मे । कवि
मतिराम जैसे तीछन कटाच्छ तेरे ऐसे कहा सर
है अनंग के निषंग मे ॥ सहज सरूप सुघराई
रीझि मन मेरो डोलत है तेरे अचरज की त-
रंग मे । सित सारिही सों सब सौते रंगी स्याम
रंग सितसारीही सो रंग्यौ स्यामलाल रंग मे ॥

दोहा ।

नथुनी गजमुकतानि की लसत चारु सिंगार ।
जनि पहिरै सुकुमारि तन और. आभरन भार॥

अथ विभ्रमहाव – दोहा ।

उलटे भूषन बसन को होत जहां पहिराव ।
त्यासों विभ्रमहाव सब बरनत हैं कबिराव॥५५॥

सांझ समय चलि आवत जात जहां तहां लोगनहू न डरौगी । प्रीतम सो रतिही यह रूप धौं ह्वैहैं कहां जब अंक भरौगी ॥ जानतही मतिराम तऊ चतुराई कि बान न हीय धरौगी । किङ्किनि को उर हार किये कहो कौन सौ जादू बिहार करौगी ॥ ५६ ॥

दोहा ।

अली चली कहु कौन पै बड़े कौन के भाग ।
उलटी कंचुकि कुचन पर कहै देत अनुराग ॥

अथ किलकिञ्चितहाव—दोहा ।

हरष गरब अभिलाष श्रम हास रोस अरु भीति ।
होत एकही बारही किलकिञ्चित यह रीति ॥

लालन बाल के द्वैही दिना ते परी मन आइ सनेह को फांसी । काम कलोलनि मै मतिराम लगी मनो बाटन मोद को आंसी ॥ प्रीतम के डर बीच भये दुलही के बिलास मनोज की गांसी । खेद बढ़ो तन कम्प उरोजनि आंखिन आंसु कपोलनि हांसी ॥ ५८ ॥

दोहा।

सकुचि रहो ये सांवरे सुनि गरबीले बोल।
चढ़त भौंह बिकसत नयन बिहँसत गोल कपोल।

अथ मोटाइत हाव दोहा।

बातन को बिघटन भये पुनि मिलापकी चाह।
सो मोटाइत हाव है बरनत सब कविनाह ॥

फूलि रहे द्रुमबेलिन सों मिलि पूरि रही अँधियारी निहारी । मोहि बिलोकि अकेली इहां कछु औरइ सी भइ दीठि तिहारी ॥ जैसी हुती हम सों तुम सों अब होइगी ऐसियै प्रीति तिहारी । चाहत जौ चित मै हित तौ जनि बोलिये कुंजनि बीच बिहारी ॥ ६२ ॥

दोहा।

झूठेही ब्रज मै लग्यो मोहि कलङ्क गोपाल।
सपनेहू कबहू हिये लगे न तुम नन्दलाल ॥

अथ कुट्टमित हाव दोहा।

जहां सुःख अरु दुःख कों प्रगट करै ज्यों बाम।
परमललित तहँ हाव यह होत कुट्टमित नाम ॥

सोने कैसी बेली अति सुन्दर नबेली बाल ठाढ़ीही अकेली अलबेली द्वार महिया। मति-राम अखिया सुधा की बरषा सी भई गई जब दीठि वाकि मुखचन्द पहिया॥ नैक नीरे जाइ करि बातनि लगाइ करि कछू मन पाइ हरि बांकी गही बहिया। सैननि चरचि लई गौननि थकित भई नैननि मै चाह करै बैननि मैं न-हिया॥ ६५॥

दोहा।

प्रीतम को मनभावती मिलत प्रेम उतकण्ठ।
बाही न छूटै कंठ तें नाहिन छूटै कण्ठ॥६६॥

अथ बिब्बोकहाव दोहा।

जो पिय को अभिमान तें करै अनादर बाम।
ताहि कहत बिब्बाक हैं जे प्रबीन गुनधाम॥

मानहु आयो है राज कछू चढ़ि बैठत ऐसे पलास के खोढ़े। गुंज गरे सिर मोरपखा मति राम हो धेनु चरावत चोढ़े॥ मोतिन को मेरो तोर्यो हर गहि हाथन सो रही चूनरि ओढ़े।

ऐसेहि डोलत साह भये तुम्हैं लाज न आवत कामरि ओढ़े ॥ ६७ ॥

दोहा ।

प्रानपियारो पग पस्यो तूं न लखत यहि ओर ।
ऐसो उरजु कठोर तौ उचितै उरजु कठोर॥६८॥

अथ ललितहाव दोहा ।

बनै बानिकन सौं सरसु सकल आभरन अंग ।
ललितहाव तासों कहत जे कवि बुद्धि उतंग ॥

मन्द गयन्द की चाल चलै कलकिङ्किनि नेवर की धुनि बाजै । मोतिनहारनि मै हियरा जियरा हरि जू कि हुलासनि साजै॥ सारी सुही मतिराम लसै मुख संग कि नारी कि यों छवि छाजै । पूरनचन्द पियूष मयूष मनौ परिवेष की रेख बिराजै ॥ ७१ ॥

दोहा ।

बिरी अधर अंजन नयन मिहँदो पग अरु पानि।
तन कंचन की आभरन नौठि परत पहिचानि॥

अथ विहित हाव दोहा ।

जो परिपूरन होत नहिं पिय समीप अभिलाष।
ताको विहित बखानहीं जिनकी कविता साष॥

सकल सहेलिन के पीछे २ डोलनि है मन्द मन्द गौन आपु आपुही करतु हैं। सनमुख होत सुख होत मतिराम जब पौन लागि घूंघट को पट उघरत है ॥ जमुना के तट बंसीबट के निकट नन्दलाल पै संकोचनि तें चाह्यो न परत है । तन तौ तिया को बर भावरे भरत मन सांवरे बदन पर भावरै भरत है ॥ ७३ ॥

दोहा ।

रूप सांवरो सांच है सुधा सिंधु को खेल ।
लखि न सकै अँखिया सखी परी लाज की जेल॥

अथ वियोग शृङ्गार दोहा ।

प्यारी पिया मिलाप बिन होत न हिय आनन्द।
सो वियोग शृङ्गार कहि बरनत सब कवि वृन्द॥

वियोग भेद दोहा ।

कहि पूरब अनुराग कहि मान प्रवास बिचारि।
रससिंगार वियोग के तीनि भेद निरधारि॥७६॥

अथ पूर्वानुराग लचन—दोहा।

जो पहिले देखै सुनै बढ़ै प्रेम की लाग।
बिन मिलाप जो बिकलता सो पूरब अनुराग॥

उदाहरण।

न्यौते गये कहूं नेह बढ़ो मतिराम दुहू के लगे दृग गाढ़े। लाल चले सुनिकै घर को तिय अंग अनंग की आगि सो डाढ़े॥ ऊँचे अटापर कांधे सहेली के ठाढ़ी दिये चितवै दुख बाढ़े। मोहनजो मन गाढ़ौ कै कै पग द्वै कच लैं फिरि होत हैं ठाढ़े॥ ७८॥

दोहा।

निरखी नेह नवीन मै नई दई यह बात।
सूखत देह दुहून की त्यौं पानिप सरसात॥७९॥

अथ मान—दोहा।

मान कहत हैं तीनि बिधि लघु मध्यम गुरु नाम।
तिनके भेद बनाइ कै बरनै कवि मतिराम॥८०॥

अथ लघुमान—दोहा।

और बाल को लखत जहँ लखै कन्त को बाल।
बरनत हैं लघुमान सो छूटत तनकहि ख्याल॥

देखत और तियाही छबीले को मान छ-
बीली के नैननि छायो । प्रीतम यौं चतुराई
करी मतिराम कछू परिहास बढ़ायो ॥ राति
रची विपरीति जो प्रीति सो ताको कवित्त ब-
नाय सुनायो । भूलि गई रिसलाजनि ते मुसु-
काइ तिया मुख नीचे कौं नायो ॥ ८२ ॥

दोहा ।

मान जनावत सबन को मनन मान को ठाट ।
बाल मनावन को लखै लाल तिहारी बाट ॥

अथ मध्यममान—दोहा ।

पियमुख औरै नारिको नाम सुनै जहँ नारि ।
होत मान मध्यम तहां बरनत सुकबि बिचारि ।

दोउ अनंद सो आंगन मांझ बिराजै अ-
साढ़ की सांझ सोहाई । प्यारी के बूझत और
तिया को अचानक नाम लियो रसिकाई ॥ आ-
यो उनै मुह मे हँसी कोह तिया सर चापसी
भौंहें चढ़ाई । आंखिन ते गिरे आंसु के बून्द
सुहास गयो उड़ि हंस की नाई ॥ ८५ ॥

दोहा।

भई देवता भाव सब वह तुमको बलि जांउ ।
वाही को मनध्यान है वाही को मुखनांउ ॥८६॥

अथ गुरु मान—दोहा ।

बोलत और तियानि सों पिय को देखै बाम ।
होत तहां गुरमान सो बरनत कवि मतिराम ॥

तेरे प्रानप्यारे कहूं सहज सुभाय प्यारी
कहा भयो बात जो कही सुकाहू बाल सों ।
ताकों एती रिस है अयानिन को रीति तूतौ
दीप की सी जोति जगै जोबन रसाल सों ॥
कवि मतिराम मेरो कह्यो उर आनि आली
मान मत ठान ऐसे मदनगोपाल सों । भौंहै
करि सूधी बिहसौहैं कै कपोल नेक सोहैं करि
लोचन रसौहैं नंदलाल सों ॥ ८८ ॥

दोहा।

बहुनायक सों बात मैं मान भलो न सयान ।
दुख सागर में बूड़िहै बांधि गरे गुरुमान ॥८६॥

प्रवास लक्षण – दोहा ।

प्रीतम बसै बिदेस मैं बिरह जहां सरसाइ ।
बरनत ताहि प्रबास हैं जे प्रवीन कबिराइ ॥

धुरवानि की धावनि मानौ अनंग की तुंग धुजा फहरान लगी । मतिराम समीर लगे लतिका बिरही बनिता थहरान लगी ॥ कहि धीरज कैसे रहै असि लौं चपला कि छटा छहरान लगी । परदेस मै पीय सँदेस न पायो पयोद घटा घहरान लगी ॥ ६१ ॥

दोहा ।

चलत लाल के गै कियो सजनी हियो पखान ।
कहा कहौं दरकत नहीं इते बियोग कृसान ॥

अथ दशा कथन ।

होत बियोग सिंगार मै प्रगट दसा नव जानि ।
प्रथम कहैं अभिलाष पुनि चिन्ता स्मृति सुबखानि ॥
गुनबरनन उदवेग पुनि कहि प्रलाप उनमाद ।
व्याधि बहुरि जड़ता कहत कबि कोविद अबिबाद ॥

अथ अभिलाष ।

ताहि कहत अभिलाष हैं जहँ मिलाप की चाह।
प्रेमकथन तें जानिये बरनत सब कविनाह ॥

सवैया ।

मोरपखा मतिराम किरीट मनोहर मूरति सो मन लैगो । कुण्डल डोलनि गोल कपोलनि बोलनि नेह को बीजनि वै गो ॥ लोल विलोचनि कौंलनि सों मुसुकाइ चितै अरुभाइ चितैगो । एक घरी घन सेतन सो अँखियानि घनौ घनसार सो दैगो ॥ ९६ ॥

मोमन सुकलों उड़िगयो अब क्योंहू न पत्याय।
बसि मोहन बनमाल में रह्यौ बनाइ बनाय ॥

अथ चिन्ता दोहा ।

दरसन सुख को भावना करै चित्त की चाह ।
तासों चिन्ता कहत हैं जे प्रवीन रसनाह॥९८॥

जैये अब कैसी महाबन बीच तहां मतिराम अकेलोइ आवै । आपने आननचन्द की चांदनी सों पहिले तन ताप बुझावै ॥ कूल कालिन्दी

कै कुञ्जनि मंजुल मीठे अमोल सुबोल सुनावै ।
ज्यों हँसि हेरि लियो हियरा हरि त्यों हँसि जो
हियरे हरि लावै ॥ ९९ ॥

दोहा ।

आज कहा कुलकान सौं लोकलाज किनि जाइ ।
कुञ्जबिहारी कुञ्ज मै कहूं मिलैं मुसुकाइ ॥ १०० ॥

स्मृति – दोहा ।

सखीसुनी पिय बातकों जो सुमिरन मनहोइ ।
संस्मृति तासौं कहत हैं कविरस ग्रन्थ बिलोइ ॥

आलसबलित कोरे काजर कलित मतिराम
वे ललित अति पानिप धरत हैं । सारस सरस
सोहैं सलज सहास सगरब सबिलास ह्वै मृ-
गनि निदरत हैं ॥ बरुनी सघन बंक तीछन
तरल बड़े लोचन कटाच्छ डरपि रहि करत हैं ।
गाढ़े ह्वै गड़े हैं ना निसारे निसरत मैनवान
सि बिसारे ना बिसारे बिसरत हैं ॥ २ ॥

दोहा ।

सोभा सोनति सुंदरी नवसनेह सौं बाम ।
तन बूड़त रंगपीत मै मन बूड़त रंगस्याम ॥ ३ ॥

अथ गुन कथन—दोहा ।

बिरहबीच जो पीयको सुंदरतादि सराह ।
गुनबरनन तासों कहैं जे प्रवीन कबिनाह ॥४॥

मोरपखा मतिराम किरीट मै कंठ बनो बनमाल सोहाई । मोहन को मुसुकानि मनोहर कुंडल डोलनि में छबि छाई ॥ लोचन लोल बिलास बिलोकनि को न बिलोकि भयो बस आई । वा मुख को मधुराई कहा कहौं मीठो लगै अखियानि लुनाई ॥ ५ ॥

दोहा ।

सरदचंद की चांदनी जारि डारि किन मोहि ।
वा मुख की मुसुकानि सम क्यौंहू कहो न तोहि ॥

अथ उदबेग—दोहा ।

बिरह बिथा की बिकलता जहां कछू न सोहाइ ।
ताहि कहत उदबेग हैं जे प्रबीन कबिराइ ॥

चाहि तुम्है मतिराम रसाल परी तिय के तन मै पियराई । काम के तीछन तीरनि को भरि भीर तूनीर भयो हियराई ॥ तेरे बिलोकन

को उतकण्ठित कण्ठ लौं आनि रह्यो जियराई।
नैक परै न मनोज के ओजनि सेज सरोजनि
मैं सियराई ॥ ७ ॥

दोहा ।

जे अंगनि पिय संग में बरषत हुते पियूष ।
ते बीछू के डंक सें भये मयङ्कमयूष ॥ ८ ॥

अथ प्रलाप — दोहा ।

उतकण्ठा ते कहत हैं जहां मोहमय बैन ।
बरनत तहां प्रलाप हैं जे प्रबीन रसऐन ॥ ९ ॥

कहियो सँदेसो प्रानप्यारी सों पयान कीने विक्रम बिलास जेबे आपने परसके। चन्द कर बरछीन छेदि छेदि हार्यौ तन तीर तीछन मनोज की कछुक न करि सके॥ कवि मतिराम जे कुलिस की सी घाइ क्यौंहू गनत न कोकिल की कूकनि की कस की। कैसे दरकतु मेरो उर सदा सहि रह्यौ तेरे कुच निपट कठोरनि की मसकी ॥ १० ॥

दोहा ।

बिकललाल को बाल तू क्यौंन बिलोकत आनि ।
बोलि कोकिलन सो कहै बोल तिहारे जानि॥

अथ उनमाद—दोहा ।

उतकण्ठा ते मोहमय बृथा करत कछु काज ।
ताहि कहत उनमाद हैं कविकोविद सिरताज॥

जा छिन ते मतिराम कहै मुसुकात कहूं
निरख्यौ नन्दलालहिं । ताछिन ते छिनहीं छिन
छीन विथा बहु बाढ़ी वियोग की बालहिं ॥
बूझति हौं कर सौं किसलै गहि बूझति स्याम
सुरूप गोपालहिं । भोरी भई है मयङ्कमुखी
भुज भेटत है भरि अंक तमालहिं ॥ १३ ॥

दोहा ।

रोइ उठे छिन हँसि उठै छन उठि चलै रिसाइ ।
बौरी करी बनाइ तैं रूप ठगौरी लाइ ॥ १४ ॥

व्याधि लक्षण—दोहा ।

काम पीर तैं पियरई ताप दूबरी होइ ।
तासौं व्याधि बखानहीं कविकोविद सब कोइ ॥

व्याधि यथा ।

बरषा सो लागी निसबासर बिलोचननि बाढ्यो परबाह भयो नावनि उतरिबो । रह्यो जात कौन पै सुकवि मतिराम अब बिरह अनल ज्वाल जालनि सों जरिबों ॥ जैयत समीप तो उड़ैयत उसासनि सैं हम कों तौ भयो उत हेरत हहरिबो । कियो कहा चाहत सो कहो न कुंवर कान्ह रह्यो अब वाको उपचारनि कों करिबो ॥ १६ ॥

दोहा ।

देखि परै नहिं दूबरी सुनिये स्याम सुजान ।
जानि परै परजंक मै अंग आंच अनुमान ॥१७॥

जड़ता ।

उत्कंठादिक तें जु ह्वै अचल चित्त अरु अंग ।
तासों जड़ता कहत हैं जे प्रबीन रसरंग ॥१८॥

सूंघै न सुवांस रहै रंग रागतें उदास भूलि गई सुरति सकल खान पान की । कबि मतिराम इकटक अनिमिख नैन बूझे न कहति

बैन समुझै न आन की ॥ थोरीसी हँसनि औ ठगोरी ऐसी डारि ठग बौरी करी भोरी तैं किसोरी वृषभान की । तबतें बिहारी वह भई है पखान कै सी जबतें निहारी रुचि मोर के पखान की ॥ १९ ॥

दोहा ।

अनमिख लोचन बाल के यातें नन्दकुमार ।
मीच गई जरि बीचहीं बिरहानल की झार ॥

समुझिसमुझि सबरीझिहैं सज्जनसुकवि समाज ।
रसिकन के रस को कियो नयो ग्रंथ रसराज ॥

इति श्रीसुकवि मतिरामकृत रसराजग्रन्थे
नायकानिरूपणं समाप्तम् ।